>

Title: Issue regarding change in pattern of Civil Services Examination.

श्री अर्जुन राम मेघवाल (बीकानेर): महोदय, देश के सभी प्रदेशों के युवा सिविल सेवाओं में ज्यादा से ज्यादा जाना चाहते हैं और सभी प्रदेशों के युवाओं को सिविल सेवाओं में मौका मिलना भी चाहिए जिससे देश में एकजुटता व सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व बना रहे, लेकिन सिविल सेवा परीक्षा 2013 की प्रारम्भिक परीक्षा में देश भर के 16 हजार से ज्यादा छात्र सफल हुए हैं जिनमें हिंदी भाषी राज्यों के छात्रों की संख्या 100 भी नहीं है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि सिविल सेवा परीक्षाओं के पैटर्न में परिवर्तन करके सिविल सर्विस एप्टीट्यूट टेस्ट यानी सीसेट लागू कर दिया गया है। इसमें सात मुख्य बिंदु हैं। प्रत्येक में से औसतन 20 सवाल पूछे जाते हैं। इस प्रकार प्रारम्भिक परीक्षा के प्रश्न पत्र में वस्तुनिÂष्ठ किस्म के 150 प्रश्न पूछे जाते हैं। सातवां बिंदू इंग्लिश लैंग्वेज काम्प्रिहेंसिव स्किल्स का है जिसमें 20 प्रश्न पूछने से 40 नंबर अंग्रेजी के होंगे जो हिन्दी भाषी राज्यों के विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब, मजदूरों, अनुसूचित जाति, जनजाति, ओबीसी के साधन विहीन छात्र-छात्रा अपनी मेहनत के बल पर परीक्षा में सफल होते थे उन्हें प्रारंभ में ही अंग्रेजी के कारण बाहर किया गया है। वÂर्ष 2008 की मुख्य परीक्षा में 11320 छात्रों ने परीक्षा दी थी जिसमें से 5117 छात्र हिंदी माध्यम व 5822 अंग्रेजी माध्यम व शेष छात्र दूसरी भाÂषाओं के थे और इस वष्Âाऩ 2013 की प्री-परीक्षा में ही मात्र 100 से भी कम हिंदी भाषी छात्र पास हुए हैं जो मैन परीक्षा में मात्र 30 से 40 ही रह जाएंगे।

अतः भारत सरकार के कार्मिक व लोक शिकायत मंत्रालय से आपके माध्यम से मांग करता हूं कि सिविल सेवाओं की परीक्षाओं में सीटेट में इंग्लिश लैंग्वेज कप्रीहेंसिव स्किल को हटा कर पूर्व की भांति सिविल सेवा परीक्षा में भाषाओं को क्वालीफाईंग पेपर ही रखा जाए ताकि सभी छात्रों को समान अवसर मिल सके और प्रशासन की भाषा संबंधी दक्षता का उद्देश्य भी पूर्ण हो सके। भारतीय प्रशासन में सभी क्षेत्रों के लोग आए जो सभी क्षेत्रों के लिए काम करें।

सभापति महोदय : श्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा उठाये गये विष्Âाय के साथ श्री राजेन्द्र अग्रवाल को भी सम्बद्ध किया जाता है।